1961F Seth Champalal Ji Ranivale

Seth Champalalji Ranivale (In Sanmati Sandesh, 1961)

स्व० रा० ब० श्रीमान् सेठ चम्पालाल जी रानीवाले

(श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री)

जैन समाज खुर्जा के रानीवालों के घराने से भलीभाँति परिचित हैं। स्व० सेठ मेवारामजी और सेठ पद्मराज जी ने देश समाज और जैन साहित्य की जो सेवाएं की हैं। वे सर्व विदित हैं। उनके ही पितृव्य श्रीमान सेठ चम्पालाल जी सा० व्यापार के निमित्त ब्यावर (अजमेर) चले आये और वहीं निवास करने लगे। आप अति दूरदर्शी, एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, अतः ब्यावर में आने के कुछ दिनों पश्चात् ही आपने न केवल अपने कारोबार को ही जमा लिया, बल्कि नगर के प्रमुख व्यक्तियों में भी आपने अग्र स्थान प्राप्त कर लिया। जहाँ व्यापारिक क्षेत्र में आपने कपड़ा-मील आदि अनेक कारखाने स्थापित किये हैं, वहां धार्मिक क्षेत्रों में एक सुन्दर स्थान पर विशाल जैन मन्दिर, धर्मशाला, पाठशाला आदि की भी स्थापना की, जो आज उक्त सेठ जी की 'नशियाँ' के नाम से प्रसिद्ध हैं और जहाँ पर दि० जैन समाज का सब से बड़ा ऐ० पन्नालाल जैन सरस्वती भवन भी आज अनेक वर्षों से विद्यमान है। भा० ब० दि० जैन महासभा का महाविद्यालय जब चौरासी मथुरा में अति शोचनीय दशा को प्राप्त हो रहा था, तब आपने सुपुत्रों के परामर्श से ब्यावर बुलाकर उसे अपनी नशियाँ में ही आश्रय दिया था और उसके व्यय का अधिकांश भार स्वयं वहन किया। आपकी दिनचर्या धार्मिक थी। प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व ही आप सपरिवार नशियाँ जी पहुँचते थे और देव पूजन, स्वाध्याय, सामायिक आदि करके घर जाते थे। सायंकाल सूर्यास्त के पूर्व ही पुनः नशियां जी आ जाते और सामायिक, देव-दर्शन करके स्वयं ही गद्दी पर बैठकर शास्त्रवचनिका करते थे। आपकी इस धार्मिक प्रवृत्ति का यह प्रभाव था कि जहां उनके परिवार के सब छोटे बड़े लोग दोनों वक्त धार्मिक कर्तव्यों में भाग लेते थे, वहाँ नगर के भी अनेक धार्मिक व्यक्ति नियमित रूप से सम्मिलित होते थे। मैंने अपने जीवन में ऐसा नियमित दिनचर्या बिताने वाला दूसरा परिवार आज तक भी नहीं देखा है। उसमें भी यह विशेषता रही है कि आपके मुनीम, रोकड़िया, गुमास्ते आदि भी सभी धर्म-कार्यों में सदा साथ रहते थे।

सन् १९२७ के अन्त में भा०व० दि० जैन महाविद्यालय में मैं धर्माध्यापक नियुक्त होकर पहुँचा। उसके पूर्व जैनपत्रों में अन्तर्जातीय विवाह की चर्चा बड़े जोरों से चल रही थी और वह आगम के अनुकूल है या प्रतिकूल? इसके विषय में दोनों पक्षों की ओर से विद्वानों की सम्मतियाँ प्रकट हो रही थीं। मेरी भी सम्मति उसके आगमानुकूल होने के रूप जैनमित्र में प्रकाशित हो चुकी थी। अतः जब महासभा के कुछ तात्कालिक कर्णधारों को मेरी नियुक्ति का पता लगा, तो उन्होंने महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी कमेटी की बैठक में मेरे विरुद्ध वातावरण बनाना प्रारंभ किया। यहाँ पाठकों को यह बतला देना उचित होगा कि उस समय महासभा का सूत्र संचालन प्रायः उन्हीं लोगों के हाथ में था, जो कि अन्तर्जातीय विवाह को भी धर्म एवं आगमविरुद्ध मानते थे, और इसी आशय का प्रस्ताव भी महासभा में पास हो चुका था कि जो अन्तर्जातीय विवाह आदि को आगमानुकूल मानता है, वह महासभा का सदस्य नहीं हो सकता। इसी प्रस्ताव की आड़ लेकर मेरे विरुद्ध भी वातावरण बनाकर यह प्रचार किया जा रहा था कि जब उक्त विचारवाला व्यक्ति महासभा का सदस्य भी नहीं हो सकता है, तब उसके अंगभूत महाविद्यालय में धर्माध्यापक जैसे पद पर कैसे रह सकता है? फल स्वरूप महाविद्यालय की तात्कालिक

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

[पृष्ठ ३६ का शेष]

प्रबन्धकारिणी के कुछ प्रमुख सदस्यों ने कमेटी की बैठकमें मुझे महाविद्यालय से पृथक् करने की माँग रखी। उस समय महाविद्यालय की उक्त कमेटी की ये बैठकें सेठ सा० की हवेली पर ही होती थीं, पर अस्वस्थ होने के कारण सेठ सा० उसमें उपस्थित नहीं हो सके, अतः मेरे पृथक् करने का विचार आगामी बैठक के लिए रखा गया। इस बीच एक दिन सेठ सा० ने मुझे बुलाकर पूछा—कि आपके विरुद्ध यह वातावरण क्यों बन रहा है और इसकी असलियत क्या है ? मैंने उनसे अपनी प्रकाशित सम्मति की बात कह उनसे ही पूछा—'क्या पहले समय में अन्तर्जातीय या विजातीय विवाह नहीं होते थे, और क्या ये विवाह धर्म या आगम-विरुद्ध थे ? तो बोले—पहले तो इनका आम-रिवाज था। बड़े बड़े मोक्षगामियों तक ने ऐसे विवाह किये हैं। जब मैंने उन्हें बतलाया कि मेरे विरुद्ध वातावरण बनाने वाले प्रमुख लोग तो यह कहते हैं कि पहले भी ऐसे विवाह नहीं होते थे। या जो होते थे, वे आगम या धर्म के प्रतिकूल थे। तो ऐसे कहने वालों से क्या कहा जाय ? मेरी बात सुनकर सेठ सा० हँसकर बोले—आप कोई चिन्ता न करें, अगली बैठक में सब ठीक हो जायगा। जब अगली बैठक हुई और मेरे बावत विचार चलने लगा, तो मेरे पक्षकार किसी सदस्य ने कहा कि सेठ सा० के पास चलकर इसका निर्णय किया जाय।

चूंकि सेठ सा० अस्वस्थ थे और इसलिए बैठक में नहीं आ सके थे, अतः उनके पास जाकर के ही सदस्यों ने उक्त चर्चा छोड़ी तो सेठ सा० ने खुले शब्दों में कहा—पहले तो अन्तर्जातीय या विजातीय विवाह होते थे, उन्हें कहीं भी अधार्मिक नहीं कहा गया है, तो विरोधी दल निरुत्तर ही नहीं हो गया, अपितु इतना अधिक रुष्ट भी हो गया कि सुनते हैं—महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी की सदस्यता से भी त्यागपत्र देकर चला गया, पर सेठ की दृढ़ता के कारण मुझे महाविद्यालय से पृथक् नहीं करा सका।

यह एक व्यक्तिगत बात है। पर उनके जीवन के ऐसे सैंकड़ों प्रसंग आये हैं, जब उन्होंने अन्य सेठों के समान किसी के बहकावे में न आकर अपनी सूझ-बूझ का दृढ़ परिचय दिया है।

आपने अपने ८५ वर्ष के दीर्घ जीवनकाल में लगातार ६५ वर्ष से भी अधिक समय तक ऊपर लिखी गई दिन चर्या का नियमित रूप से पालन किया है, आज भी उनका सारा परिवार उसी भाँति दिनचर्या का पालन करते हुए धार्मिक कर्त्तव्यों के पालन में पूर्णरूप से संलग्न है।